श्री दशलक्षण धर्म पूजा

आडिल्ल

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं।
सत्य शौंच संयम तप त्याग उपाव हैं।।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं।
चहुँगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार है।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् ।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा-मार्दवआजर्व-सत्य-शौच, संयम-तप, त्यागअकिंचन्यब्रह्मचर्यंति दशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।। १ ।।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।। भव...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्माय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।। २ ।।

अमल अखंडित सार, तंदुल चन्द्र समान शुभ।। भव...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्माय अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।। ३ ।।

फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरध लोकलो।। भव...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।। ४ ।।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट-रस-संजुगत।। भव...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५ ।।

वाति कपूर सुधार, दीपक ज्योति-सुहावनी।। भव...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।। ६ ।।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।। भव...

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७ ।।

फल की जाति अपार, घ्राण नयन मन मोहने।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजौं सदा।।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।। ८ ।।

आठों दरब सवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।। भव...
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्माय अर्घं निर्वपामीती स्वाहा।। ९ ।।

अंग पूजा

सोरठा

पीड़ें दुष्ट अनेक, बांध मार बहुविधि करै।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा।।

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस, पर-भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो।।
कहि हैं अयानो वस्तु छीनैं, बांध मार बहुविधि करैं।
घरतैं निकारै तन विदारै, बैर जो न तहाँ धरें।।
तै करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध-अग्नि बुझाय प्रानी, साम्यजल ले सीयरा।।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। १ ।।

मान महा विष रूप, करहिं नीच-गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।।
उत्तम मार्दव-गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना।
बस्यो निगोदमाहितै आया, दमरी रूकन भाग बिकाया।।
रूकन बिकाया भागवशतै, देव इकइन्द्री भया।
उत्तम मुआ चांडाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य-जीवन-धन-गुमान, कहा करे जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन, बड़े जनकी, ज्ञान का पावै उदा।।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। २ ।।

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना बसे।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा।।
उत्तम आर्जव-रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मनमें होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसौं करियें।।
करिये सरल तिहुँजोग अपने, देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अंगारसी।।
नहिं लहैं लक्ष्मी अधिक छल करि, करम-बन्ध-विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। ३ ।।

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।।
उत्तम सत्य-वरत पालीजै, पर-विश्वासधात नहिं कीजै।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।।
पेखो तिहायत पुरुष सांचेको, दरब सब दीजिये।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, सांचगुन लख लीजिये।।
ऊँचे सिंहासन बैठ वसु नृप, धरम का भूपति भया।
वसु झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। ४ ।।

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देहसों।
शौच सदा निरदोष धरम बड़ो संसार में।।
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पापको बाप बखाना।
आशा-पाश महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्राणी।।
प्राणी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञानध्यान प्रभावतै।
नित गंग-जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं।।
ऊपर अमल मल भर्‌यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधु लहैं।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। ५ ।।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो।
संयम रतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत है।।
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजैं अघ तेरे।

सुरग-नरक-पशुगतिमें नाहीं, आलस-हरनकरन सुख ठाहीं।।
ठाहीं पृथ्वी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्राण नैना, कान मन सब वश करो।।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग-कीचमें।
इक घरी मत बिसरो करो नित, आव जम-मुख बीचमें।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। ५ ।।

तप चाहैं सुरराय, करम-शिखरको वज्र है।
द्वादश विधि सुखदाय, क्यों न करै निज शक्तिसम।।
उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैल को वज्र समाना।
बस्यो अनादि-निगोद-मंझारा, भू-विकलत्रय-पशु तन धारा।।
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आय निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता।।
अति महादुर्लभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरै।
नर-भव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलसा धरै।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। ६ ।।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिये।
धन बिजुली उनहार, नरभव लाहो लीजिये।।
उत्तम त्याग कहयो जगसारा, औषधिशास्त्र अभय आहारा।।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान सम्भारै।।
दोनों संभारै कूप-जलसम दरब घर में परिनया।
निज हाथ दीजें साथ लीजै, खाय खोया बह गया।।
धनि साध शास्त्र अभय-दिवैया, त्याग राग विरोधकों।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोधकों।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। ८ ।।

परिग्रह चौबीस भेद, त्याग करें मुनिराज जी।
तिसना भाव उछेद घटती जान घटाइए।।
उत्तम आकिंचन गुणजानों, परिग्रह-चिन्ता दुःख ही मानो।
फांस तनकसी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुःख भालै।।
भालैं न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरैं।
धनि नगनपर तन-नगन ठाडै, सुर असुर पायनि परैं।।

धरमांहि तिसना जो घटावै, रुचि नहीं संसारसौं।
बहु धन बुरा हूं भला कहिये, लोग पर उपगारसौं।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।९ ।।

शील-बाड़ नौ राख ब्रह्म-भाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहुं सफल नर-भव सदा।।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौं माता बहिन सुता पहिचानौं।
सहै बान-वर्षा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे।
कूरे तिया के अशुचि तन में, कामरोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसान मांहिं, काक ज्यों चोंचै भरैं।
संसार में विषवेल नारी, तज गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दशपैंड़ि चढिके, शिव-महल में पगधरा।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

जयमाला

दोहा

दशलचछन वंदौं सदा, मन-वांछित फलदाय।
कहों आरती, भारती, हम पर होहु सहाय।।१।।

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर-बाहर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेद ज्ञान सब भासै।।२।।
उत्तम आर्जव कपट मिटावै दुरगति त्यागि सुगति उपजावै।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोले।।३।।
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, संतोषी गुण-रत्न भंडारी।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नर-भव सफल करै ले साता।।४।।
उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करम-शत्रुको टालै।
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई।।५।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारै, परम समाधि दशा विसतारै।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुर सहित मुक्ति-फल पावै।।६।।

दोहा:-करै करम की निरजरा , भवपींजरा विनाशि।
अजर अमर पद को लहै, 'द्यानत' सुख की राशि।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्यधर्मेभ्य: पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।